Chapter 9

सिद्ध साहित्य

Kesharam Chouhan, Department of Hindi
Shri Jain Terapanthi College, Ranawas, Pali

प्रमुख सिद्ध

सरहपा शबरपा लुइपा कण्हपा डोंभिपा कुक्कुरिपा विरूपा ।

सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है।

सिद्ध संत अपने नाम के अंत में ' पा 'लगाते हैं ।

सिद्धों की भाषा में उलटवासी शैली का पूर्ण रूप देखने को मिलता है नालंदा तक्षशिला इनके प्रमुख केंद्र थे बाद में यह भोट देश को चले गए ।

मुनिदत्त सूरि व मुनि अद्वयवज्र ने सिद्धों की भाषा को संधा भाषा कहा जिसका तात्पर्य है कुछ स्पष्ट व कुछ अस्पष्ट।

साधना अवस्था में निकली सिद्धों की वाणी – चर्यागीत

सिद्ध काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियां –

1 गुरु की महिमा
2 संध्या भाषा शैली
3 शून्यवाद की प्रतिष्ठा कर साधना में शिव व शक्ति की युगल (साधना) उपासना।
4 जाति प्रथा व वर्ण भेद का विरोध
5 पंचमकार – मांस मछली मुद्रा मदिरा मैथुन।
6 साधनात्मक रहस्यवाद– शांत एवं श्रृंगार रस की प्रधानता।
7 योग को प्रमुखता इस साहित्य में ब्राह्मण एवं वैदिक धर्म का खंडन किया गया है।

प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएं

1 सरहपा 779 ई दोहाकोश
सिद्ध मार्ग (सहज ज्ञान शाखा) के प्रवर्तक
चौपाई दोहा – इस शैली का सर्वप्रथम प्रयोग इनकी रचनाओं में मिला।
दोहाकोश के संपादक – राहुल सांकृत्यायन

2 सबरपा 780 ई. सरहपा के शिष्य
१ चर्यापद
२ वज्रयोगिनी साधना
३ महामुद्रा वज्रगीति साधना

3 लुइपा– 773 ई. लगभग सबरापा के शिष्य।
लुइपाद गीतिका
इनकी साधना से प्रभावित होकर उड़ीसा के तत्कालीन राजा व मंत्री उनके शिष्य बन गए थे।

4 . डोंभिपा – 840 ई लगभग
१ डोंबिवगीतिका २ योगचर्या ३अक्षरद्विकोपदेश

5 कण्हपा – 820 ई लगभग
गुरु सिध्द गुरु – सिद्ध जालंधरपा
१ कण्हपादगीतिका
२ चर्याचर्य विनिश्चय

6 भुशुकपा – बोधिचर्यावतार

7 कुक्कुरीपा – योगभावनाप्रदेश , चर्यापद गुरु – चरपटिया

8 जालंधरपा –वियुक्तमंजरी गीति
हुंकार चित्त, भावना क्रम

9 धामपा – सुगत दृष्टिगीतिकाचर्या

10 दारिकपा– महागुह्ययतत्वोपदेश

11 आर्य देवपा – कावेरीगीतिका

12 कंवणपा– चर्यागीतिका

13 कंबलपा – असंबंधसर्गदृष्टि

14 गुंडारिपा – चर्यागीत

15 जयनंदीपा– तर्कमुगंदरकारिका

नाथ साहित्य

नाथों की संख्या – 9 प्रसिद्ध नौ नाथ –

१ आदिनाथ –भगवान शिव

ISBN: 978-93-344-1269-7

२ मत्स्येंद्र नाथ
३ गोरखनाथ
४ चर्पटनाथ
५ गहिणी नाथ
६ ज्वालेन्द्र नाथ
७ चौरंगी नाथ
८ भर्तृहरिनाथ
९ गोपीचंद नाथ

नाथ साहित्य की प्रवृत्तियां–

1 काया साधना (हठयोग) पर बल
2 नारी निंदा
3 सद्गुरु का विशेष महत्व
4. मनोविकार व भोग विलास की भर्त्सना
5 . शून्यवाद की प्रतिष्ठा
6 . वर्णाश्रम पर चोट
7 . चारित्रिक सुचिता पर
8 बाह्याडंबरो का खंडन
9 शैवमत का प्रतिपादन
10 शांत रस की प्रधानता

गोरखनाथ की रचनाएं

१ सबदी
२ पद
३ प्राण संकली
४ शिष्यादरशन
५ नरवैबोध
६ रोमावली
७ ज्ञान चौतीसा
८ गोरख सार
९ योग चिंतामणि
१० दत्त गोरख संवाद
११ अभैमात्रा जोग
१२ आतमबोध
१३ . पन्द्रह तिथि
१४ सप्त वार
१५ मछिंद्र गोरखनाथ
१६ ज्ञान तिलक
१७ पंचमात्रा
१८ ज्ञानामृत योग
१९ योगेश्वरी साखी।

ISBN: 978-93-344-1269-7